रात्रि क्लास 18/10/68 ओमशान्ति विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?
शिवबाबा की याद में बैठे हो और स्वर्ग की बादशाही याद है? क्योंकि स्कूल में जब आते हैं तो अपने एमऑबजेक्ट की और टीचर की याद रहती है। बच्चे भी जो आते हैं तो यहाँ बैठ बाप को जितना याद करेंगे विकर्म विनाश होंगे और बच्चों को खुशी होगी। इनको कहा जाता है महामंत्र। इनको ही मन्मनाभव मद्याजीभव कहते हैं। गीता ही है। डायरैक्ट बाप आकर बच्चों को पढ़ाते हैं। इसलिए बच्चों को पद्मापदमभाग्यशाली लक्की सितारे कहा जाता है। खुशी का पारा बच्चों को चढ़ा रहता है। उठते–बैठते कहाँ भी कोई काम करते बाप को याद कर सकते हो। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। सतोप्रधान बनने लिए जरूर पुरुषार्थ करना पड़े। मनुष्य तो घोर–अंधियारे में हैं। तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। कल्प–2 ऐसे ही होता है। अनेकानेक गाया गया है। अभी जो भी एक्टविटी होगी वह फिर कल्प बाद होगी। तुम्हारी संगमयुग की सुहावनी यात्रा है चढ़ने की। उन्हों की यात्राएँ हैं गिरने की। माया विघ्न भी इस यात्रा में ही डालती है। बाप जिससे विश्व, स्वर्ग की बादशाही मिलती है उनको पूरी रीति याद करना है। बच्चियाँ अभ्यास कराकर फिर बाप पास ले आती हैं। यहाँ बाप से डायरैक्ट सुनने, रिफ्रेश होने, विश्राम पाने आते हो। फिर भी माया भुला देती है। माया छोड़ती कहाँ भी नहीं। करके बाहर में जास्ती तंग करती है यहाँ कम करती है। साहूकारों के लिए तो यहाँ ही स्वर्ग है। म्युजियम आदि में भल बड़े–2 आदमी आते हैं; परन्तु उनकी तकदीर में नहीं है। सिर्फ राय निकालेंगे। यह गरीबों को मिलना चाहिए। गरीब पर उन्हों को तरस पड़ता है। बाप भी कहते हैं गरीब ही साहूकार बनते हैं। भारत गरीब खण्ड है फिर इन्हों को ही साहूकार बनाते हैं। भारत ही अविनाशी खण्ड है ना। बाप आबू में ही आते हैं। भल जन्म तो और कहाँ लेते हैं। फिर यहाँ तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है जिससे ही सर्व की सद्गति होती है। अम्बा भी यहाँ है। शिवबाबा भी यहाँ ही है। दिलवाला मंदिर खास इस समय का ही यादगार है। ऊपर में स्वर्ग बना हुआ है। बनाने वाले तो भक्त लोग थे ना। देवताओं को ऊपर में दिखाया है। नीचे तपस्या हो रही है। यहाँ भी बहुत अच्छा म्युजियम खोलना पड़ेगा ना। अभी टाइम पड़ा है। बच्चे दिल में समझते होंगे माया बाप को भुला देती है। ऐसा कब सुना बच्चा कहते हैं हमको माया बाप की याद भुलाती है। पुरुषोत्तम संगम पर ही माया से तुम्हारी लड़ाई है। माया अलग है। सम्पत्ति अलग है। माया 5 विकार है। भक्तिमार्ग में माया की युद्ध नहीं होती। विघ्न नहीं पड़ते। यहाँ ज्ञान मार्ग में आने से लड़ाई का सवाल क्यों उठता है। बच्चे फील करते हैं बरोबर हम बाप को याद करते हैं माया भुला देती है। कब हरा भी देती है। सबसे जास्ती हराना है विकार में जाना। बच्चे जानते हैं पावन दुनिया थी। कलियुग को पतित दुनिया कहेंगे। गाते भी हैं पतित पावन आओ; परन्तु हम पतित हैं यह फीलिंग नहीं आती है। साधु–सन्त आदि सभी पतित हैं तब तो जाते हैं ना। तो ऐसी2 प्वाइंट्स धारण कर समझाना चाहिए। पतित–पावन तो बाप ही है। पानी कैसे पावन बनावेगी। पानी तो जहाँ तहाँ है। है तो बरसात का पानी वह कैसे पावन बनावेगी। सर्विस तो बच्चों के लिए ढेर हैं। फुर्सत तो बहुत ही है। ऐसे–2 सर्विस कर बहुतों का कल्याण कर सकते हो। पतित–पावन बाप को ही बुलाते हैं। नदी को बुलाया जाता है क्या! तुम बच्चे बहुत सेवा कर सकते हो। शिवबाबा से बेहद का वरसा मिलेगा। भक्तिमार्ग में कब कोई ऐसे बता न सके जैसे तुम बताते हो शिवबाबा को याद करो तो स्वर्ग का वरसा मिलेगा। चित्र तो है तुम्हारे पास। ट्रेन में बैज सभी को पड़ी हुई थी? आज जो पार्टी आई है सभी को बैज पड़ा हुआ था? ब्राह्मण नहीं पहनती है तो समझेंगे देह–अभिमान है। बैज पर तो अनेकों की सर्विस कर सकते हैं। तुम बच्चे बहुत कल्याणकारी हो। कुछ न कुछ इशारा देना है, बाप का परिचय देना है; क्योंकि तुम पैगम्बर, मैसेन्जर हो। तो सभी को मैसेन्ज देना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है और दूसरों को भी पैगाम देना है बाप की याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। भक्ति करते हैं सद्ग(ति) को पाने; परन्तु उनको पता थोड़े ही पड़ता है। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सभी एक/दो को पापात्मा बन... रहते हैं। नम्बरवन पाप बाप कहते हैं मेरी निन्दा करते हैं। तब तो गायन है यदा2.....बाप कहते हैं अब घर चलो। घर जाने लिए कितनी मेहनत करते हैं। सन्यासी इन बातों को नहीं जानते। बाप आकर कहते हैं बच्चे चलो अब घर। बाप कहते हैं 84 के चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाइट।